vinetur

भारत में प्रीमियम स्पिरिट्स की वृद्धि व्यापक बाजार से करीब तीन गुना तेज

ISWAI के मुताबिक, 2025 में स्पिरिट्स की बिक्री मात्रा में कम कीमत वाली बोतलों की हिस्सेदारी अब भी करीब आधी थी

गुरुवार, 8 अक्टूबर 2026



इंटरनेशनल स्पिरिट्स एंड वाइन्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्रीमियम स्पिरिट्स की बिक्री सस्ती शराब की तुलना में कहीं तेज़ी से बढ़ रही है। यह उपभोक्ता मांग के ऊंची कीमत वाली बोतलों की ओर लगातार बढ़ने का संकेत है, हालांकि कम कीमत वाले उत्पादों की बाजार में अब भी बड़ी हिस्सेदारी है।

रिपोर्ट के मुताबिक, 2022 से 2025 के बीच भारत में प्रीमियम स्पिरिट्स की बिक्री मात्रा में सालाना चक्रवृद्धि दर से 10.2% की वृद्धि हुई। इसी अवधि में पूरे स्पिरिट्स बाजार की सालाना वृद्धि 3.7% रही, यानी प्रीमियम श्रेणी की वृद्धि करीब तीन गुना थी। इसके मुकाबले, सबसे कम कीमत वाली श्रेणी में सालाना 1.1% और नियमित स्पिरिट्स में 1.4% की वृद्धि हुई, जो बड़े पैमाने के बाजार वाली श्रेणियों में काफी धीमी रफ्तार दिखाती है।

ये आंकड़े किसी एक साल की अचानक उछाल के बजाय बिकने वाली शराब के प्रकारों में बदलाव का संकेत देते हैं। रिपोर्ट में दिए गए वृद्धि दर के आंकड़े 2022-2025 की अवधि की सालाना चक्रवृद्धि दरें हैं। गुरुवार को The Times of India की रिपोर्ट में जिस अध्ययन का हवाला दिया गया, उसमें हर श्रेणी के लिए इस्तेमाल की गई पूरी मूल्य-सीमाएं प्रकाशित नहीं की गईं। ISWAI के सार्वजनिक संग्रह में भी पूरी कार्यप्रणाली तत्काल उपलब्ध नहीं थी।

वृद्धि की धीमी रफ्तार के बावजूद, कम कीमत वाली शराब भारतीय बाजार का अहम हिस्सा बनी हुई है। रिपोर्ट का अनुमान है कि 2025 में सबसे कम कीमत वाली और नियमित श्रेणियों की कुल हिस्सेदारी स्पिरिट्स की बिक्री मात्रा में करीब आधी थी। इसका मतलब है कि प्रीमियम उत्पादों की ओर बदलाव ऐसे बाजार में हो रहा है, जहां किफायती ब्रांड अब भी खरीद का बड़ा हिस्सा रखते हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, प्रीमियम श्रेणियों में सबसे तेज़ वृद्धि सुपर-प्रीमियम भारतीय निर्मित स्पिरिट्स में हुई, जिनकी बिक्री मात्रा 2022 से 2025 के बीच सालाना करीब 34% बढ़ी। हालांकि, यह श्रेणी अब भी छोटी है। ISWAI का अनुमान है कि 2025 में सुपर-प्रीमियम भारतीय निर्मित उत्पादों की हिस्सेदारी स्पिरिट्स की कुल बिक्री मात्रा में 1% से कम थी। इससे पता चलता है कि तेज़ वृद्धि कम आधार से हो रही है।

रिपोर्ट ने प्रीमियम उत्पादों की ओर व्यापक रुझान को बढ़ती आय, उपभोक्ताओं की बदलती आकांक्षाओं और महंगे ब्रांडों तक बेहतर पहुंच से जोड़ा। इसमें खुदरा बिक्री के तौर-तरीकों में बदलाव का भी उल्लेख किया गया। रिपोर्ट के अनुसार, अधिक विकल्पों, बेहतर उत्पाद प्रदर्शन और ग्राहकों को दुकान में घूमकर देखने के लिए ज्यादा जगह वाले स्टोर लोगों को नए ब्रांड आज़माने और अधिक खर्च करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। इससे संकेत मिलता है कि यह बदलाव सिर्फ आय का मामला नहीं, बल्कि शराब को पेश करने और बेचने के तरीके से भी जुड़ा है।

रिपोर्ट में भारतीय माल्ट व्हिस्की सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली श्रेणियों में से एक रही। 2022 से 2025 के बीच भारतीय माल्ट की बिक्री मात्रा सालाना करीब 39% बढ़ी, जबकि स्कॉच माल्ट में सालाना वृद्धि करीब 5% रही। ISWAI के मुताबिक, 2024 में भारतीय माल्ट बिक्री मात्रा के लिहाज से स्कॉच माल्ट से आगे निकल गई। यह उस श्रेणी में उल्लेखनीय बदलाव है, जहां आयातित उत्पादों को लंबे समय से कई उपभोक्ताओं के बीच प्रतिष्ठा हासिल रही है।

आयातित स्पिरिट्स की कुल बिक्री मात्रा में भी व्यापक बाजार से तेज़ वृद्धि हुई, हालांकि कुल बिक्री में उनकी हिस्सेदारी अपेक्षाकृत कम रही। रिपोर्ट के अनुसार, तीन साल की अवधि में उनकी बिक्री मात्रा सालाना करीब 8% बढ़ी और बाजार में उनकी हिस्सेदारी 2.4% से बढ़कर 2.7% हो गई। यह वृद्धि विदेशी ब्रांडों की लगातार मांग दिखाती है, लेकिन यह भी संकेत देती है कि कुछ श्रेणियों में, खासकर माल्ट व्हिस्की में, घरेलू प्रीमियम उत्पाद और तेज़ी से जगह बना रहे हैं।

ये आंकड़े भारत के शराब बाजार में लंबे समय से जारी बदलाव की अधिक विस्तृत तस्वीर पेश करते हैं। उत्पादक और खुदरा विक्रेता उपभोक्ताओं को अधिक मूल्य वाले उत्पादों की ओर ले जाने की कोशिश करते रहे हैं। प्रीमियम और सुपर-प्रीमियम श्रेणियों में बिक्री मात्रा की वृद्धि अहम है, क्योंकि इससे पता चलता है कि यह बदलाव केवल कीमतों या महंगाई तक सीमित नहीं है। अधिक उपभोक्ता नियमित और किफायती श्रेणियों से ऊपर की श्रेणियों के उत्पाद खरीद रहे हैं, भले ही कुल बिक्री मात्रा में प्रीमियम श्रेणियों की हिस्सेदारी अब भी कम हो।

ISWAI ने भारत के मादक पेय बाजार का मूल्य करीब Rs 6.2 लाख करोड़, यानी लगभग $71 billion आंका।